



International Journal of Research in Academic World



Received: 30/June/2026

IJRAW: 2026; 5(9):95-98

Accepted: 02/August/2026

विवेकी राय की व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन

¹डॉ. स्नेहलता निर्मलकर और ²पवन कुमार पाण्डेय

¹सह-प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉ.सी.व्ही. रमन वि.वि., करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

²शोधार्थी, हिन्दी विभाग, डॉ.सी.व्ही. रमन वि.वि., करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

किसी भी साहित्यकार का व्यक्तित्व उसकी रचनाओं में स्वाभाविक रूप से परिलक्षित होता है, किंतु निबंध विधा में तो लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति सर्वत्र स्पष्ट दिखाई देती है। विशेषतः ललित निबंध में निबंधकार का व्यक्तित्व ही उसका प्राणतत्त्व होता है। यहाँ व्यक्तित्व से अभिप्राय उस विशिष्ट रचनात्मक सत्ता से है जिसमें रागात्मकता, सरसता, पांडित्य, विनोदप्रियता और प्रकृति प्रेम जैसी प्रवृत्तियाँ विद्यमान रहती हैं। इन्हीं गुणों के कारण ललित निबंधों में लालित्य, भावुकता, रोचकता और सहज सरसता का संचार होता है। निबंधों में व्यक्तित्व के प्रतिबिंबन को रेखांकित करते हुए बाबू गुलाब राय का मत है कि— “निबंध में व्यक्तित्व छिपाया नहीं जा सकता। लेखक जो कुछ लिखता है उसको अपने निजी दृष्टिकोण से लिखता है, उसके पीछे उसके निजी अनुभवों की प्रेरणा दिखाई देती है।” अर्थात् निबंधकार अपनी अनुभूतियों और दृष्टिकोण से ही जीवन को अभिव्यक्त करता है। इन्हीं निजी अनुभवों को लोकजीवन और लोकसंस्कृति से जोड़कर जिन लेखकों ने अपने निबंधों को भावपूर्ण और वैचारिक रूप से प्रखर बनाया है, उनमें डॉ. विवेकी राय का स्थान विशेष है। डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ ने उनके संबंध में उचित ही लिखा है कि— “श्री विवेकी राय के ललित निबंधों का विन्यास उनका अपना है और वे भेड़चाल का अंग न होकर रचनाकार के अपने अनुभवों से अनुस्यूत रचनाकर्म हैं।

मुख्य शब्द: रागात्मकता, लोकसंस्कृति, प्रकृति, लोकजीवन।

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में ललित निबंध विधा ने विशेष स्थान बनाया है। यह निबंध केवल विचार-प्रधान न होकर साहित्यिक संवेदना, सौंदर्यबोध और जीवन-दर्शन से युक्त होते हैं। इसी परंपरा में डॉ. विवेकी राय का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने ललित निबंधों में ग्रामीण जीवन को केवल वर्णित ही नहीं किया, बल्कि उसकी आत्मा को, उसके तात्त्विक स्वरूप को गहराई से अभिव्यक्त किया है। ग्रामीण संस्कृति, किसान का श्रम, खेत-खलिहान, लोकगीत, पर्व-त्योहार, ग्रामीण समाज के संबंध और उसकी जिजीविषा—ये सब उनके निबंधों के केंद्र में हैं। डॉ. विवेकी राय की साहित्यिक उपलब्धियाँ आकस्मिक या संयोगवश प्राप्त नहीं हुईं, न ही वे किसी दान या कृपा की उपज हैं। यह उनकी स्पष्ट उद्देश्यनिष्ठा, अखंड साधना, आत्मबल, अनवरत संघर्ष और कर्मठ प्रवृत्ति की स्वाभाविक फलश्रुति है। उनके

साहित्यिक जीवन का आधार “स्वायत्त धर्म—कर्म—विपाक” रहा है, जिसके अंतर्गत उन्होंने बिना किसी मोह या लोभ के, निस्पृह भाव से रचनाकर्म को साधना का रूप दिया। विवेकी राय एक आस्थावान, निस्पृह और कर्मयोगी साहित्यकार रहे हैं। उनका सृजन यश केवल आत्मसंतोष का साधन नहीं था, बल्कि वह भारतीय जनजीवन की योग-क्षेम भावना और लोकमंगल के उद्देश्यों से प्रेरित होकर अविराम चलता रहा। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ ग्राम्य जीवन की आत्मा को स्पंदित करती हैं और भारतीय माटी से जुड़े शाश्वत मूल्यों को प्रमाणित करती हैं। उनकी गंभीर, मौलिक और विविध विधाओं की मानक कृतियाँ चाहे वह ललित निबंध हों, उपन्यास हों, कहानियाँ हों या संस्मरणकृतसतत प्रकाश में आती रहीं। प्रत्येक रचना धरती से जुड़ी साधना का परिणाम है। वास्तव में, उनकी सशक्त और बहुआयामी साधना तथा नितांत एकान्तनिष्ठा का ही परिणाम है कि उन्होंने अनेक विधाओं और क्षेत्रों में

साहित्य को ऐतिहासिक योगदान प्रदान किया।

2. रामप्यारे रसिक का व्यक्तित्व

डॉ. विवेकी राय का जन्म 19 नवम्बर 1924 ई. (कुछ स्थानों पर 1925 ई. भी उल्लिखित) को उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद के भरौली ग्राम (ननिहाल) में हुआ। उनके जन्म से पूर्व ही परिवार एक भीषण दुर्घटना से गुज़रा। पिता श्री शिवपाल राय का निधन प्लेग जैसी भयंकर महामारी में हो गया था। उस समय उनकी माता गर्भवती थीं, और पति की असामयिक मृत्यु के कारण वे मायके भरौली चली गईं। वहीं पर डॉ. विवेकी राय का जन्म हुआ। बचपन से ही उनके जीवन में अभाव और प्रतिकूल परिस्थितियाँ साथ रहीं। माता का स्नेह अवश्य उन्हें मिला, किंतु पिता का वात्सल्य सहारा कभी न मिल सका। उनका पालन-पोषण ननिहाल में मामा श्री बसाऊ राय के संरक्षण में हुआ। इस प्रकार, प्रारम्भिक जीवन में ही उन्हें जीवन की कठोरताओं का अनुभव हुआ। डॉ. राय ने एक साक्षात्कार में स्वयं कहा है कि— “मेरे परिवार में एक दुर्घटना हो गयी थी और दुर्घटना यह थी कि मेरे जन्म से पहले करीब एक-डेढ़ महीने.... मेरे पिता जी प्लेग में मर गए और इसके बाद मेरी माँ मेरे ननिहाल चली गईं। वहीं मेरा जन्म हुआ।” [1] इन प्रतिकूल परिस्थितियों के बाद भी विवेकी राय की आरंभिक शिक्षा गाँव पर ही चलती रही। पितृ स्नेह से वंचित डॉ. विवेकी राय का बाल्य जीवन मातृ-स्नेह और मामा श्री बसाऊ राय की देख-रेख में बीता। अभावग्रस्त वातावरण के बावजूद वे अपनी असाधारण प्रतिभा के बल पर निरन्तर आगे बढ़ते रहे। अपने पैतृक ग्राम सोनवानी में पढ़ाई करते हुए उन्होंने मिडिल परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यह उनके गाँव के लिए एक अभूतपूर्व उपलब्धि थी।

विवेकी राय स्वयं अपने प्रारम्भिक शिक्षाद्वानुभव का उल्लेख करते हुए कहते हैं— “जब मैंने प्रथम श्रेणी में मिडिल पास किया, उस समय अपने गाँव में मैं पहला आदमी था। आम तौर पर यह सोचा गया कि जब मिडिल स्कूल पास हो गए तो अब और पढ़ने की क्या जरूरत है। बैल खरीदे गए, खेती शुरू हुई और मैं किसान बन गया। परन्तु एक पंडित मास्टर के कहने पर मैंने आवेदन दिया और लोअर प्राइमरी स्कूल में अपने ही गाँव में सहायक अध्यापक नियुक्त हो गया। वर्षों तक मिडिल स्कूल का मास्टर रहा, फिर हाई स्कूल का मास्टर बना, बाद में इंटरमीडिएट का अध्यापक हुआ और इसी बीच प्राइवेट परीक्षाएँ देता रहा। धीरे-धीरे इसी संघर्ष के बीच कॉलेज तक पहुँचा।

3. डॉ. विवेकी राय का कृतित्व

डॉ. विवेकी राय का कृतित्व हिंदी साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट स्थान रखता है। वे मूलतः ग्राम्य जीवन के कवि, कथाकार और ललित निबंधकार रहे हैं, जिनकी लेखनी में ग्रामीण संस्कृति, किसान जीवन, लोक परंपराएँ, प्रकृति और भारतीय सामाजिक यथार्थ का प्रामाणिक चित्रण मिलता है। उनके कृतित्व की सबसे

बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने गाँव की मिट्टी की गंध, किसानों के संघर्ष, ग्रामीण समाज की पीड़ा और सुख-दुख को सहज भाषा और संवेदनशील शैली में प्रस्तुत किया। विवेकी राय का साहित्य महज़ वर्णनात्मक न होकर, उसमें जीवन के गहरे दार्शनिक और तात्विक पक्ष भी दिखाई देते हैं। उन्होंने अपने निबंधों और उपन्यासों में जहाँ ग्रामीण जीवन की करुणा और संघर्ष का यथार्थवादी चित्रण किया, वहीं उसकी सांस्कृतिक गरिमा और मानवीय मूल्यों को भी रेखांकित किया।

4. डॉ. विवेकी राय का प्रमुख कृतियाँ

विवेकी राय की प्रथम कहानी ‘पाकिस्तानी’ दैनिक ‘आज’ में 1945 में प्रकाशित हुई थी। इसके बाद उनकी लेखनी हर विधा पर चलने लगी जो आजीवन चलती रही। उनका रचना कार्य कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्टाज, डायरी, समीक्षा, सम्पादन एवं पत्रकारिता आदि विविध विधाओं से जुड़े रहे थे। अब तक उन सभी विधाओं से सम्बन्धित लगभग 60 कृतियाँ आपकी प्रकाशित हो चुकी हैं और लगभग 10 प्रकाशनाधीन हैं। मनबोध मास्टर की डायरी और फिर बैतलवा डाल पर इनके सबसे चर्चित निबंध संकलन हैं और सोनामटी उपन्यास राय का सबसे लोकप्रिय उपन्यास है।

प्रमुख कृतियाँ:—

- **ललित निबंध:** मनबोध मास्टर की डायरी, गंवाई गंध गुलाब (1980ई०), फिर बैतलवा डाल पर, आस्था और चिंतन (1991ई०), जुलूस रुका है, उठ जाग मुसाफिर।
- **कथा साहित्य:** मंगल भवन, नममी ग्रामम्, देहरी के पार, सर्कस, सोनमती, कलातीत, गूंगा जहाज, पुरुष पुरान, समर शेष है, आम रास्ता नहीं है, आंगन के बंधनवार, आस्था और चिंतन, अतिथि, बबूल, जीवन अज्ञान का गणित है, लौटकर देखना, लोकरिन, मेरे शुद्ध श्रद्धेय, मेरी तेरह कहानियाँ, सवालियों के सामने, श्वेत पत्र, ये जो है गायत्री।
- **काव्य:** दीक्षा,
- **साहित्य समालोचना:** कल्पना और हिन्दी साहित्य, अनिल प्रकाशन, 199, नरेन्द्र कोहली अप्रतिम कथा यात्री।
- **अन्य:** मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें, 1984 पद।

भोजपुरी निबंध एवं कविता

- **भोजपुरी निबंध निकुंज:** भोजपुरी के तैतालिस चुने हुए निबंध, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, 1977
- **यमुना, सरवस्ती:** भोजपुरी कहानी, निबंध, संस्मरण, भोजपुरी संस्थान, 1992
- **जनता के पोखरा:** तीनी गो भोजपुरी कविता, भोजपुरी साहित्य संस्थान, 1984
- विवेकी राय के व्याख्यान, भोजपुरी अकादमी, पटना,

तृतीय वार्षिकोत्सव समारोह, रविवार, 2 मई 1982, पर आयोजित व्याख्यानमाला में शंभोजपुरी कथा साहित्य का विकास विषय पर दिये। भोजपुरी अकादमी, 1992

उपन्यास: अमंगलहारी, भोजपुरी संस्थान, 1998, के कहला चुनरी रंगा ला, भोजपुरी संसद, 1968, गुरु-गृह गयौ पढ़न रघुराय, 1992

सम्मान एवं पुरस्कार:-

हिन्दी साहित्य में योगदान के लिए 2001 में उन्हें महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार एवं 2006 में यश भारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा महात्मा गांधी सम्मान से भी पुरस्कृत किया गया।

- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'प्रेमचन्द पुरस्कार', साहित्य भूषण सम्मान, मध्य प्रदेश शासन द्वारा 'राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान'।
- बिहार राजभाषा विभाग द्वारा 'आचार्य शिवपूजन सहाय पुरस्कार' हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'शविद्यावाचस्पति' और 'साहित्य महोपाध्याय' सम्मान।
- 2001 में महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार।
- 2006 में यश भारती पुरस्कार।
- 2016 में शार्परिपोर्टर आंचलिक पत्रकारिता युगपुरुष सम्मान, आजमगढ़

5. ग्रामीण जीवन का चित्रण:

विवेकी राय के साहित्य की सबसे प्रमुख विशेषता ग्राम्य जीवन का सजीव और यथार्थ चित्रण है। उनके यहाँ गाँव केवल प्रकृति और सरल जीवन का आदर्श संसार नहीं है। गाँव में गरीबी, शोषण, संघर्ष, राजनीतिक हस्तक्षेप, सामाजिक असमानता और परिवर्तन भी मौजूद हैं।

उनके साहित्य पर हुए हालिया शोध में यह निष्कर्ष सामने आता है कि उन्होंने गाँव को न तो केवल आदर्श स्थान के रूप में प्रस्तुत किया और न ही केवल समस्याओं के केंद्र के रूप में; बल्कि ग्रामीण जीवन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों को चित्रित किया।

6. किसान जीवन और कृषि-संस्कृति

किसान विवेकी राय के साहित्य का केंद्रीय पात्र है। किसान के माध्यम से वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था, श्रम, भूमि और सामाजिक संबंधों की जटिलताओं को सामने लाते हैं। उनके यहाँ खेत केवल आर्थिक उत्पादन का साधन नहीं है, बल्कि ग्रामीण जीवन और संस्कृति का आधार है। किसान की मेहनत, उसकी आशाएँ, आर्थिक संकट और सामाजिक स्थिति उनके लेखन में संवेदनात्मक ढंग से अभिव्यक्त होती है।

7. बदलता हुआ गाँव

विवेकी राय के साहित्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष परिवर्तनशील ग्रामीण समाज है। स्वतंत्रता के बाद गाँवों

में राजनीति, बाजार, शिक्षा, प्रशासन, पलायन और आधुनिक जीवन-मूल्यों का प्रभाव बढ़ा। विवेकी राय ने इन परिवर्तनों को अपने साहित्य में दर्ज किया। आधुनिक आलोचनात्मक अध्ययन भी उनके कथा-साहित्य में राजनीतिक स्वार्थ, आर्थिक शोषण, पलायन, बाजारवाद और बदलती सामाजिक संरचना जैसे विषयों की उपस्थिति को रेखांकित करते हैं।

8. भाषा और शैली:

विवेकी राय की भाषा उनकी साहित्यिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है। उनकी भाषा में मानक हिंदी के साथ-साथ ग्रामीण बोलचाल, लोक-प्रयोग और भोजपुरी अंचल की भाषिक संवेदना दिखाई देती है।

उनकी शैली में— सहजता, आत्मीयता, लोक-संस्कृति की उपस्थिति, व्यंग्यात्मकता, भावात्मकता, चित्रात्मकता जैसे गुण दिखाई देते हैं। उनकी भाषा पाठक को ग्रामीण परिवेश के निकट ले जाती है और पात्रों तथा घटनाओं को अधिक स्वाभाविक बनाती है।

9. आंचलिक चेतना

विवेकी राय को आंचलिक चेतना से जुड़े प्रमुख साहित्यकारों में माना जाता है। उनके साहित्य में पूर्वी उत्तर प्रदेश और भोजपुरी अंचल का सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन विशेष रूप से उपस्थित है। एक समकालीन लेख में भी उन्हें ग्रामीण चेतना से जुड़े साहित्यकार के रूप में रेखांकित किया गया है। उनकी आंचलिकता संकीर्ण क्षेत्रीयता नहीं है। स्थानीय जीवन के माध्यम से वे व्यापक भारतीय सामाजिक अनुभव को व्यक्त करते हैं। गाँव के छोटे-छोटे प्रसंगों में भी उन्हें व्यापक सामाजिक प्रश्न दिखाई देते हैं।

10. सामाजिक चेतना

विवेकी राय के साहित्य में सामाजिक चेतना का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है। वे ग्रामीण समाज की समस्याओं को केवल वर्णन के स्तर पर नहीं रखते, बल्कि उनके पीछे काम करने वाली सामाजिक शक्तियों की ओर संकेत करते हैं। उनके साहित्य में सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक असमानता, राजनीतिक प्रभाव, पारिवारिक संबंध और नैतिक मूल्यों का परिवर्तन जैसे विषय दिखाई देते हैं। इस दृष्टि से उनका साहित्य समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध कराता है।

11. सामाजिक चेतना

विवेकी राय के साहित्य में सामाजिक चेतना का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है। वे ग्रामीण समाज की समस्याओं को केवल वर्णन के स्तर पर नहीं रखते, बल्कि उनके पीछे काम करने वाली सामाजिक शक्तियों की ओर संकेत करते हैं। उनके साहित्य में सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक असमानता, राजनीतिक प्रभाव, पारिवारिक संबंध और नैतिक मूल्यों का परिवर्तन जैसे विषय दिखाई देते हैं। इस दृष्टि से उनका साहित्य समाजशास्त्रीय अध्ययन के

लिए भी महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध कराता है।

12. विवेकी राय के साहित्य की प्रासंगिकता

आज ग्रामीण भारत तेजी से बदल रहा है। कृषि, रोजगार, शिक्षा, पलायन, तकनीक, बाजार और शहरीकरण ने गाँवों के जीवन में व्यापक परिवर्तन किया है। ऐसे समय में विवेकी राय के साहित्य को पढ़ना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उसमें ग्रामीण समाज की संरचना और उसके परिवर्तन को निकट से देखने का अवसर मिलता है। उनका साहित्य हमें यह समझने में सहायता करता है कि गाँव केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि भाषा, परंपरा, संस्कृति, श्रम, संबंध और सामुदायिक स्मृतियों से निर्मित सामाजिक संसार है।

13. निष्कर्ष

डॉ. विवेकी राय हिंदी और भोजपुरी साहित्य के ऐसे महत्वपूर्ण रचनाकार हैं जिन्होंने ग्रामीण भारत को अपनी रचनात्मक चेतना का केंद्र बनाया। उनका साहित्य गाँव के जीवन को रोमानी दृष्टि से देखने के बजाय उसके सुख-दुःख, संघर्ष, विसंगतियों और परिवर्तनों को सामने लाता है। उनके उपन्यासों, कहानियों और निबंधों में किसान, खेत, गाँव, लोकभाषा, लोक-संस्कृति और बदलता सामाजिक जीवन बार-बार उपस्थित होते हैं। उनकी रचनाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि ग्रामीण जीवन भारतीय समाज की मूल संरचना से गहराई से जुड़ा हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थो सूची

1. काव्य के रूप— बाबू गुलाब राय, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1967, पृ0 235।
2. अक्षर बीज की हरियाली— वेदप्रकाश अमिताभ, प्रथम संस्करण: 2002 ई0, पृ0 59।
3. आम रास्ता नहीं है— विवेकी राय, (1988), पृ0 99।
4. डॉ. विवेकी राय, गँवई गंध गुलाब, मौलवी साहब (संग्रह), 21।
5. जगत तपोवन सो कियो, प्राक्कथन: रामचन्द्र तिवारी, पृ0 6।
6. डॉ. विवेकी राय: सृजन यज्ञ जारी है, सम्पादक— डॉ. अनिल कुमार आंजनेय, भूमिका में उद्धृत, प्रथम संस्करण: 2000 ई0, पृ. 3।
7. डॉ. देवराज, भारतीय संस्कृति, पृ. 118।